IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

शहरी क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालयों की अध्यापिकाओं में शिक्षण अनुभव के आधार पर व्यावसायिक संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ. साधना अग्रवाल * प्रो. ममता बाकलीवाल **

*सहायक प्राध्यापक, राजीव गाँधी महाविद्यालय, भोपाल

** **विभागाध्यक्ष** शिक्षा संकाय राजीव, गाँधी महाविद्यालय,भोपाल

" स्वस्थ शरीर मन में स्वस्थ का विकास होता है" यह मत आदि काल से ही शिक्षाविदों का रहा है और यह निर्विवाद सत्य भी है। शरीर स्वस्थ तभी रह पाता है जब मन पूरी तरह से संतुष्ट हो और तभी वह आत्मविश्वास से भरा रह पाता है और उसमें नयी ऊर्जा का संचार होता है। एक शिक्षक यदि अपने व्यवसाय से संतुष्ट है, तभी वह अपने शिष्यों को, समाज को तथा देश को एक नई दिशा दे पाता है, क्योंकि शिक्षक-छात्रों का आदर्श होता है । वर्तमान में क्या शिक्षक अपने व्यवसाय से संतुष्ट है? शोध पत्र के माध्यम से यह जाने का प्रयास किया गया है। शोध कार्य हेतु डॉ. प्रमोद कुमार एवं डॉ.एन.मुथा द्वारा निर्मित शिक्षक व्यावसायिक संतुष्टि प्रश्नावली का उपयोग करके भोपाल जिले के शहरी क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालयों की 100 अध्यापिकाओं का शिक्षण अनुभव के आधार पर यादृच्छिक विधि द्वारा चयन किया गया तथा निष्कर्ष में अध्यापिकाओं की व्यावसायिक संतुष्टि में सार्थक अंतर नही पाया गया।

शिष्य के लिये गुरू एक आदर्श होता है। उसकी विचारधारा, रहन सहन और सबसे बढ़कर आचरण का प्रभाव शिष्य पर और समाज पर पड़ता है। गुरूदेव रवीन्द्र नाथ टैगोर के अनुसार " अध्यापक को संयमी, ज्ञानी और आदर्श की प्रतिमूर्ति होना चाहिऐ" अध्यापक के ज्ञान की अपेक्षा उसके आचरणों और मनोभावों का प्रभाव शिष्य पर पड़ता है। स्पष्ट है कि सच्चरित्र अध्यापक देश की अमूल्य निधि है। एक अच्छे शिक्षक में सामान्यतया तीन बातों की अपेक्षा की जाती है – वह संतोषी हो, अपने व्यवसाय के प्रति निष्ठावान हो तथा अपने विद्यार्थियों अथवा शिष्यों का हित चिंतक हो। किसी भी स्तर पर व्यक्ति को विवशता की स्थिति मानकर अध्यापक नहीं बनना चाहिऐ। इस व्यवसाय के प्रति तभी उन्मुख होना चाहिये जब अध्यापन के प्रति रूचि हो तथा इस कार्य को गौरवपूर्ण माना जाये। तभी वह अपने कार्य में सजीवता तथा नवीनता ला पायेगा। व्यावसायिक संतुष्टि अध्यापकों के लिये एक प्रकार की प्रेरणा है जिससे वह अपना कार्य संपादित करने में आनंद की अनुभूति प्राप्त करने हैं। शहरी क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालय की अध्यापिकाओं अपने व्यवसाय से संतुष्ट है अथवा नहीं? शोध के माध्यम से यह जानने का प्रयास किया गया है। नदीम, पुजु, जहीर (2013) नें ग्रामीण एवं शहरी माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि के विभिन्न आयामों में कोई महत्वपूर्ण अंतर नही पाया। चौधरी (2012) नें शिक्षण के प्रति दृष्टिकोण के संबंध में शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि के अध्ययन में शिक्षकों में सकारात्मक व्यावसायिक संतुष्टि पायी गयी।

उद्देश्य :-

1. शहरी क्षेत्र में शासकीय एवं अशासकीय माध्यमिक विद्यालयों की अध्यापिकाओं में व्यावसायिक संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. शिक्षण अनुभव के आधार पर शहरी क्षेत्र के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों की अध्यापिकाओं में व्यावसायिक संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पनाये :-

1. शहरी क्षेत्र के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों की अध्यापिकाओं की व्यावसायिक संतुष्टि में सार्थक अंतर नही है।
2. शिक्षण अनुभव के आधार पर शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय की अध्यापिकाओं की व्यावसायिक संतुष्टि में सार्थक अंतर नही है।
3. शिक्षण अनुभव के आधार पर शासकीय विद्यालयों की अध्यापिकाओं की व्यावसायिक संतुष्टि में सार्थक अंतर नही है।
4. शिक्षण अनुभव के आधार पर अशासकीय विद्यालयों की अध्यापिकाओं की व्यावसायिक संतुष्टि में सार्थक अंतर नही है।

सीमाऐं :-

प्रस्तुत शोध कार्य भोपाल जिले के शहरी क्षेत्र में शासकीय एवं अशासकीय माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में कार्यरत 100 अध्यापिकाओं तक सीमित है।

अनुसंधान विधि :-

अनुसंधानात्मक प्रदत्तों का एकत्रित करने के लिये सर्वेक्षण विधि को अपनाया गया है। न्यादर्श हेतु भोपाल जिले के शहरी क्षेत्र से शासकीय एवं अशासकीय माध्यमिक स्तर की 100 अध्यापिकाओं को यादृच्छिक विधि द्वारा चुना गया।

अध्ययन उपकरण :-

उपकरण के रूप में डॉ.प्रमोद कुमार एवं डी.एन मुथा द्वारा निर्मित शिक्षक व्यावसायिक संतुष्टि प्रश्नावली का उपयोग किया गया है।

प्रदत्तों का सांख्यिकीय विश्लेषण :-

परिकल्पनाओं एवं प्रदत्तों की विश्वसनीयता जानने के लिये मध्यमान, मानक विचलन तथा 'टी' परीक्षण का उपयोग किया गया है।

तालिका क्र.01

शहरी शासकीय एवं अशासकीय अध्यापिकाओं की व्यावसायिक संतुष्टि से संबंधित 'टी' परिणाम :-

क्र.	समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मानक त्रुटि	'टी' मान	निष्कर्ष
1	शहरी शासकीय	50	23.62	5.44	1.06	2.83	सार्थक
2	शहरी अशासकीय	50	20.62	5.26			

उपरोक्त तालिका क्र.01 से स्पष्ट है कि अध्यापिकाओं की व्यावसायिक संतुष्टि की तुलना में प्राप्त 'टी' मान 2.83 है जो कि 0.01 तथा 0.05 के सार्थकता स्तर पर सार्थक है अर्थात शहरी क्षेत्र के शासकीय एवं अशासकीय माध्यमिक विद्यालयों की अध्यापिकाओं की व्यावसायिक संतुष्टि में सार्थक अंतर है अत: शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होती है।

तालिका क्र.02

शिक्षण अनुभव के आधार पर माध्यमिक स्तर की शहरी क्षेत्र के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों की अध्यापिकाओं में व्यावसायिक संतुष्टि से संबंधित 'टी' परिणाम :-

क्र.	समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मानक त्रुटि	'टी' मान	निष्कर्ष
1	0- 10	43	21.09	6.39	1.20	1.05	असार्थक
2	10 वर्ष से ऊपर	57	22.89	5.41			

उपरोक्त तालिका क्र.02 से स्पष्ट है कि अध्यापिकाओं की व्यावसायिक संतुष्टि की तुलना में प्राप्त 'टी' मान 1.5 है जो कि 0.01 तथा 0.05 के सार्थकता स्तर पर असार्थक है अर्थात शिक्षण अनुभव के आधार पर अध्यापिकाओं की व्यावसायिक संतुष्टि में सार्थक अंतर नही है अत: शोध परिकल्पना स्वीकृत होती है अर्थात शिक्षण अनुभव व्यावसायिक संतुष्टि पर प्रभाव नही डालना है।

तालिका क्र.03

शिक्षण अनुभव के आधार पर शहरी क्षेत्र के शासकीय माध्यमिक विद्यालय की अध्यापिकाओं में व्यावसायिक संतुष्टि से संबंधित 'टी' परिणाम :-

क्र.	समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मानक त्रुटि	'टी' मान	निष्कर्ष
1	0- 10	19	3.26	3.26	1.22	0.467	असार्थक
2	10 वर्ष से ऊपर	31	23.83	5.44			

उपरोक्त तालिका क्र.03 से स्पष्ट है कि अध्यापिकाओं की व्यावसायिक संतुष्टि की तुलना में प्राप्त 'टी' मान 0.467 है, जो कि 0.01 तथा 0.05 के सार्थकता स्तर पर असार्थक है अर्थात शिक्षण अनुभव के आधार पर शहरी क्षेत्र के शासकीय माध्यमिक विद्यालय की अध्यापिकाओं की व्यावसायिक संतुष्टि में सार्थक अंतर नही है अत: शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है।

तालिका क्र.04

शिक्षण अनुभव के आधार पर शहरी क्षेत्र के अशासकीय माध्यमिक विद्यालय की अध्यापिकाओं में व्यावसायिक संतुष्टि से संबंधित 'टी' परिणाम :-

क्र.	समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मानक त्रुटि	'टी' मान	निष्कर्ष
1	1- 10	24	19.37	7.69	1.87	1.27	असार्थक
2	10 वर्ष से ऊपर	26	21.76	5.26			

उपरोक्त तालिका क्र.04 से स्पष्ट है कि अध्यापिकाओं की व्यावसायिक संतुष्टि की तुलना में प्राप्त 'टी' मान 1.27 है जो कि 0.05 के सार्थकता स्तर पर असार्थक है, अर्थात शिक्षण अनुभव के आधार पर शहरी क्षेत्र के अशासकीय माध्यमिक विद्यालय की अध्यापिकाओं की व्यावसायिक संतुष्टि में सार्थक अंतर नही है अत: शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है।

निष्कर्ष :-

- शहरी क्षेत्र के शासकीय एवं अशासकीय माध्यमिक स्तर की अध्यापिकाओं की व्यावसायिक संतुष्टि में सार्थक अंतर पाया गया।
- शिक्षण अनुभव के आधार पर शहरी क्षेत्र की शासकीय एवं अशासकीय माध्यमिक विद्यालयों की अध्यापिकाओं की व्यावसायिक संतुष्टि में सार्थक अंतर नही पाया गया अर्थात शिक्षण अनुभव व्यावसायिक संतुष्टि पर प्रभाव नही डालता है।

सुझाव :-

1. व्यावसायिक संतुष्टि हेतु समय-समय पर शिक्षकों को वेतन, महंगाई भत्ता, चिकित्सा राशि आदि भी बढ़ती रहनी चाहिऐ ताकि शिक्षकों को उनके व्यवसाय से संतुष्टि मिल सके तथा रूचि बनी रहे।
2. शिक्षकों को अध्यापन कार्य में स्वतंत्रता मिलनी चाहिऐ।
3. संस्थागत कार्यो के निर्णय लेते समय शिक्षकों को विश्वास में लेना चाहिऐ।

संदर्भ ग्रंथ :-

कपिल, एच.के. (2007) अनुसंधान विधियां, अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा। चौधरी, आर.दीपिका (2012) शिक्षण के प्रति दृष्टिकोण के संबंध में शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि, रिसर्च एक्सपो इंटरनेशनल मल्टीडिसीप्लनरी रिसर्च जनरल, वॉ. 2(2)
नदीम, एन.ए., पुजु जाहिद अहमद एवं जहूर नाडिया (2013) ग्रामीण एवं शहरी माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि एवं सामंजस्य, स्टैण्डर्ड जनरल ऑफ एजुकेशन एण्ड ऐसे, वॉ. 1(1) पृ.क्र.25-28
भट्टाचार्य, जे.सी (2008) अध्यापक शिक्षा, अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा।